Date : 24 मई 2023

क्वाड में भारत-अमेरिका संबंध

संदर्भ

- एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा कर्तव्यों को साझा करने वाले समान विचारधारा वाले सहयोगियों के लिए अमेरिका सामरिक रूप से महत्त्वपूर्ण हिंद-प्रशांत क्षेत्र में वृहद् भारत-अमेरिकी सहयोग की हिमायत कर रहा है। भारत ही एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा जिम्मेदारियों को साझा कर सकता हैं।

क्वाड के बारे में-

- इसे चतुर्भुज सुरक्षा संवाद के रूप में भी जाना जाता है।
- इसमें चार सदस्य देश भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान है। ये सभी देश समुद्री सुरक्षा और व्यापार के साझा हितों पर एकजुट हुए हैं।
- इसका उद्देश्य एक मुक्त, खुला और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्रसुनिश्चित करना तथा उसका समर्थन करना है।

राष्ट्रों के बीच साझा मूल्य हैं:

- राजनीतिक लोकतंत्र
- बाजार अर्थव्यवस्थाएं
- बहुलवादी समाज

रूपरेखा–

- क्वाड का विचार पहली बार वर्ष 2007 में जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने रखा था। हालाँकि यह विचार आगे विकसित नहीं हो सका, क्योंकि चीन के ऑस्ट्रेलिया पर दबाव के कारण ऑस्ट्रेलिया ने स्वयं को इससे दूर कर लिया।
- क्वाड गठबंधन को अंततः भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान की सक्रिय भागीदारी के साथ एक वर्तमान रूप दिया गया।
- इसका उद्देश्य एक मुक्त, खुला और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्रका समर्थन करना है।
- अंतत: वर्ष 2017 में भारत, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और जापान ने एक साथ आकर इस "चतुर्भुज" गठबंधन का गठन किया।

भारत के लिए क्वाड का महत्व-

- माना जाता है कि क्वाड रणनीतिक तौर पर चीन के आर्थिक और सैन्य उभार को काउंटर करता है। यदि चीनी शत्रुता सीमाओं पर बढ़ती है, तो भारत मुकाबला करने के लिए अन्य क्वाड राष्ट्रों का समर्थन ले सकता है।
- हालिया भारत-चीन सीमा पर गतिरोध और रूस की हस्तक्षेप और दबाव बनाने की अनिच्छा भारत को विकल्पों की तलाश करने के लिए मजबूर कर रही है।
- क्वाड पूर्वी एशिया में अपने हितों को आगे बढ़ाने , शक्तिशाली मित्रों के साथ रणनीतियों का समन्वय करने और अपनी एक्ट ईस्ट पहल को और अधिक मजबूती प्रदान करने के लिए एक शक्तिशाली मंच प्रदान करता है।

- यह अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान के साथ भारत के संबंधों को गहरा कर रहा है और भारत के लाभ के लिए अफगानिस्तान-पाकिस्तान में अमेरिकी नीतियों को आकार देने में नई दिल्ली को महत्वपूर्ण लाभ प्रदान कर रहा है।
- दुनिया भर में कोविड व्यवधान और चीन की गैर-पारदर्शी प्रणाली ने चीन के प्रति अविश्वास को बढ़ाया हैं।
- भारत अपनी सॉफ्ट पावर बढ़ाने के लिए वैक्सीन और फार्मा उद्योग में अपनी विशेषज्ञता का लाभ उठा सकता है।
- चीन से अमेरिका और जापान जैसे देशों की 'कारोबारी दूरी' ने भारत को विश्व का नेतृत्व करने और विश्व का विनिर्माण केंद्र बनने का अवसर प्रदान करती है।

भारत का सागर पहल

- सागर पहल (Security and Growth for All in the Region-SAGAR) द्वारा भारत इस क्षेत्र में स्थिरता और सुरक्षा पर ज़ोर दे रहा है। इससे भारत अपनी तटीय अवसंरचना को सुदृढ़ करके अपनी क्षमता में वृद्धि करना चाहता हैं।
- क्वाड के सहयोग से भारत को नौसेना को मजबूत तथा तटीय अवसंरचना को सुदृढ़ बनाने के लिए और कई रणनीतिक स्थानों तक पहुंच प्रदान कर सकता है।

क्वाड में भारत और यूएसए की वर्तमान स्थिति-

- सदी की शुरुआत से ही भारत हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में खुद को एक प्रमुख शक्ति , प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता और सुरक्षा प्रदाता के रूप में मानता रहा है।
- चीन शुरू से ही क्वाड का विरोध करता रहा है, क्योंकि इसे वह अपने वैश्विक उभार को रोकने वाली रणनीति के रूप में देखता है।

यूक्रेन युद्ध पर भारत की स्थिति:–

- यूक्रेन युद्ध सामरिक स्वायत्तता का अभ्यास करने का एक अवसर रहा है। भारत ने तटस्थता अपनाते हुए वैश्विक शांति का समर्थन करते हुए, रूस के साथ अपने संबंध बनाए रखा है। जिससे सुरक्षा भागीदार के रूप में भारत की विश्वसनीयता पर सवाल उठे।
- यहां तक कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत-अमेरिका के सामरिक हितों के बावजूद , वाशिंगटन और नई दिल्ली के बीच कई मुद्दे पर मतभेद बने हुए हैं

हिन्द प्रशांत क्षेत्र पर:

- अमेरिका एशियाई क्षेत्र के देशों पर अपना प्रभुत्व और प्रभाव प्रदर्शित करना चाहता है साथ ही वह चीन के तेज़ी के साथ विश्व महाशक्ति के रूप में उभरने को काउंटर करना चाहता है।
- इसके विपरीत, भारत हिंद-प्रशांत को एक ऐसे क्षेत्र के रूप में नहीं देखता है जो किसी विशेष राष्ट्र के प्रति शत्रुतापूर्ण है।
- नई दिल्ली इसे एक "समावेशी" क्षेत्र मानता है और कई बार उसने हिन्द -प्रशांत की अपनी परिभाषा में चीन और रूस को शामिल करने का संकेत भी दिया है।

चीन का खतरा:

- भारत, चीन की काल्पनिक मोतियों की माला नीति से परिचित हैं। इस नीति के ज़रिये वह भारत को घेरने की रणनीति पर काम कर रहा है तथा इंडो पैसिफिक क्षेत्र पर अपनी उपस्थिति दर्शा रहा है।
- चीन अपने 'वन बेल्ट वन रोड ' पहल के माध्यम से विश्व की महाशक्ति के रूप में अपने को बदलने के लिये दुनिया के विभिन्न देशों में इंफ्रास्ट्रक्चर तथा कनेक्टिविटी पर भारी निवेश कर रहा है।
- दूसरी ओर, भारत सीधे तौर पर चीन का विरोध करने से बचता हैं, और चीन के साथ अपने संबंधों में प्रतिस्पर्धा-सहयोग मॉडल को बनाए रखना पसंद करता है।

समुद्री व्यवस्था" और "नेविगेशन की स्वतंत्रता" पर विचार:

- भारत और अमेरिका के "समुद्री व्यवस्था" और "नेविगेशन की स्वतंत्रता" पर विपरीत विचार हैं।

- दोनों के कानून की अलग-अलग व्याख्याएं हैं जहां भारत ने समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCLOS) की पुष्टि की है , जबकि अमेरिका ने नहीं किया है , और वास्तव में, भारत की व्याख्या कानून की चीन की समझ के करीब है।
- जबकि भारतीय कानून अपने विशेष आर्थिक क्षेत्र में नेविगेशन संचालन की स्वतंत्रता के खिलाफ है , जबकि अमेरिका 'समुद्री कन्वेंशन में निर्धारित अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत , सभी देशों के जहाजों, उनके युद्धपोतों को इस जलीय मार्ग से गुजरने का अधिकार है.'

भारत का संतुलित दृष्टिकोण

- **संतुलित दृष्टिकोण:** यदि एशिया में स्थल क्षेत्र पर भारत-रूस साझेदारी महत्त्वपूर्ण है तो हिंद महासागर क्षेत्र में चीनी समुद्री विस्तारवाद का मुक़ाबला करने के लिये 'क्वाड' अनिवार्य है।
- चीन का मुकाबला कर सकने की अनिवार्यता भारतीय विदेश नीति की आधारशिला बनी हुई है और यूक्रेन में रूसी कार्रवाई पर दिल्ली के रुख से लेकर हर बात तक भारत की स्थिति इसी अनिवार्यता से प्रेरित है।
- भारत संभवतः उन क्षेत्रों में चीनी कार्रवाइयों को स्पष्ट रूप से विरोध करने में अरुचि दिखाएगा , जो सीधे तौर पर उसके सुरक्षा हितों (मामले में , ताइवान या यहां तक कि यूक्रेन के रूप में वर्तमान संदर्भ में दिखाई देते हैं) को प्रभावित नहीं करते हैं।

आगे का रास्ता-

- भारत एक वैश्विक व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह अपने मूलभूत उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए जिस स्थिति में है उसका लाभ उठाने के अवसरों की तलाश करेगा। यूक्रेन समस्या के परिणामस्वरूप रूस के चीन के साथ अधिक संरेखण के कारण , भारत को चीन के प्रति संतुलन के रूप में रूस पर भरोसा करना अधिक कठिन लगता है। इसलिए , सुरक्षा से संबंधित अन्य क्षेत्रों में भारत और अमेरिका का एक साथ काम करना जारी रखना दोनों देशों के हित में होगा।

Rajiv Pandey

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com

भारत-प्रशांत द्वीप समूह सहयोग मंच (FIPIC)

संदर्भ में:-

- हाल ही में, भारत के प्रधान मंत्री ने पापुआ न्यू गिनी में भारत-प्रशांत द्वीप समूह सहयोग मंच (FIPIC) की तीसरी शिखर सम्मेलन में भाग लिया।

शिखर सम्मेलन की मुख्य विशेषताएं:-

- भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी के हिस्से के रूप में , प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रशांत द्वीप राष्ट्रों के लिए 12-बिंदु विकास योजना की घोषणा की।
- 12-बिंदु विकास योजना स्वास्थ्य देखभाल , नवीकरणीय ऊर्जा और साइबर सुरक्षा सहित कई क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करती है।
- प्रशांत द्वीप राष्ट्रों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए , भारत के प्रधानमंत्री ने कहा है मेरे लिए आप बड़े महासागरीय देश हैं, छोटे द्वीप राज्य नहीं। आपका महासागर ही भारत को आपके साथ जोड़ता है।
- प्रधानमंत्री ने एक मुक्त और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के महत्व पर भी प्रकाश डाला और सदस्य देशों के विकास लक्ष्यों की सहायता के लिए भारत की प्रतिबद्धता के बारे में भी बात की।

- प्रधानमंत्री ने यह भी स्वीकार किया कि जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदा, गरीबी और अकाल जैसी पहले से मौजूद बाधाओं के अलावा खाद्य, ईंधन, उर्वरक और फार्मा की आपूर्ति श्रृंखला के संबंध में नई चुनौतियां हाल के दिनों में उभर रही हैं।
- भारत ने FIPC के माध्यम से कुछ प्रमुख सहायता परियोजनाओं की पेशकश की है जिसमें जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन के लिए एक विशेष कोष की स्थापना।
- भारत में एक व्यापार कार्यालय की स्थापना , डिजिटल कनेक्टिविटी में सुधार के प्रयास , सभी 14 प्रशांत द्वीप देशों के लिए भारतीय हवाई अड्डों पर आगमन पर वीजा का विस्तार।
- अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में सहयोग के साथ इन देशों के राजनयिकों को प्रशिक्षण देना शामिल है।

प्रशांत द्वीप राष्ट्र:-

- प्रशांत द्वीप समूह प्रशांत महासागर का एक क्षेत्र भौगोलिक क्षेत्र है जिसमें तीन मेलानेशिया , माइक्रोनेशिया और पोलिनेशिया शामिल हैं।
- प्रशांत द्वीप समूह एक त्रिभुज बनाता है , जो न्यू गिनी से शुरू होकर हवाई तक और फिर नीचे न्यूज़ीलैंड तक फैला हुआ है। न्यूज़ीलैंड और पापुआ न्यू गिनी प्रशांत द्वीप समूह के कुल वर्ग लाभ का लगभग 90% हिस्सा बनाते हैं।
- प्रशांत द्वीप देश 15 राज्यों का समूह है जो एशिया , ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका के बीच प्रशांत महासागर के उष्णकटिबंधीय क्षेत्र से संबंधित है।
- इनमें कुक आइलैंड्स , फिज़ी, किरिबाती, रिपब्लिक ऑफ मार्शल आइलैंड्स , फेडरेटेड स्टेट्स ऑफ माइक्रोनेशिया (FSM), नाउरू, पापुआ न्यू गिनी, समोआ, सोलोमन आइलैंड्स, टोंगा, तुवालु और वानुअतु नीयू, पलाऊ, शामिल हैं।

भारत-प्रशांत द्वीप समूह सहयोग मंच (FIPIC):-

- नवंबर 2014 में भारत के प्रधानमंत्री की फिजी यात्रा के दौरान भारत-प्रशांत द्वीप सहयोग (FIPIC) के लिये फोरम का शुभारंभ किया गया था।
- FIPIC को भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी के अनुरूप लॉन्च किया गया था।
- भारत की यह पहल भी दक्षिण-दक्षिण सहयोग का ही एक हिस्सा है।
- सदस्य देश – भारत और 14 प्रशांत द्वीप के देश , जैसे कि फिजी , कुक आइलैंड्स , किरिबाती, मार्शल आइलैंड्स, माइक्रोनेशिया, नाउरू, नीयू, पलाऊ, पापुआ न्यू गिनी, समोआ, सोलोमन आइलैंड्स, टोंगा, तुवालु और वानुआतु।
- FIPIC पहल प्रशांत क्षेत्र में भारत की भागीदारी का विस्तार करने के लिए एक गंभीर प्रयास का प्रतीक है।

उद्देश्य:-

- FIPIC एक बहुपक्षीय समूह है, जिसकाउद्देश्य प्रशांत द्वीप समूह क्षेत्र के साथ भारत के संबंधों को बढ़ाना है।
  - भारत ने देश में प्रशांत द्वीप फोरम देशों के लिये व्यापार कार्यालय की स्थापना की है। नई दिल्ली में FIPIC व्यापार कार्यालय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के विकास का समर्थन करेगा।
  - यह कार्यालय प्रशांत द्वीपसमूह के लिये बाजार पहुँच में सुधार हेतु सहायता करेगा।
- यह मंच **जलवायु परिवर्तन, नवीकरणीय ऊर्जा, आपदा प्रबंधन, स्वास्थ्य और शिक्षा** जैसे मुद्दों पर प्रशांत द्वीप देशों के साथ जुड़ने के लिए भारत के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

भारत के लिए प्रशांत द्वीप राष्ट्रों का महत्व:-

- हाल के वर्षों में, प्रशांत द्वीप देशों (पीआईसी) के प्रति भारत का दृष्टिकोण धीरे-धीरे सकारात्मक बदलाव रहा है। भारत की यह पहल भी दक्षिण-दक्षिण सहयोग का ही एक हिस्सा है।
- इस परिवर्तन को विभिन्न भू-राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है
- भू-राजनीतिक रूप से, PIC बड़े इंडो-पैसिफिक क्षेत्र का एक हिस्सा हैं।
- वर्तमान वैश्वीकृत दुनिया का अंतरराष्ट्रीय व्यापार 90 प्रतिशत समुद्री मार्गों से किया जाता है।

Yojna IAS
योजना है तो सम्भव है
yojnaias.com

- इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की समुद्री-गलियां अंतरराष्ट्रीय वाणिज्य के लिए महत्वपूर्ण हैं और प्रशांत द्वीप समूह इसके केंद्र में स्थित है।
- इसलिए, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इंडो-पैसिफिक का बढ़ता महत्व ने पीआईसी को वैश्विक ध्यान के केंद्र में ला दिया है।
- अपने सामरिक और आर्थिक महत्व के साथ व्यापक प्रशांत क्षेत्र ने अमेरिका , रूस, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया जैसे देशों का ध्यान आकर्षित किया है।
- यह संगठन भारत को **हिंद-प्रशांत क्षेत्र** में अपनी **रणनीतिक उपस्थिति** को मजबूत करने और इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने का अवसर भी प्रदान करता है।

स्त्रोत:
द हिन्दू

Rajiv Pandey

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com